रिकॉर्ड :– न वो हमसे जुदा होंगे..... ओम् शांति। यह गीत भी बड़ा सुंदर है। बाबा ने बहुत बार समझाया है कि घर में ऐसे–2 थोड़े रिकॉर्ड हों और कब मन मुरझाए जाए तो दो–चार रिकॉर्ड बजाने से बहिष्त में आए सकते हैं, फिर से सुरजीत हो सकते हैं। ऐसे कई गीत शिवबाबा की महिमा के हैं; क्योंकि जानते हैं कि अब हमको शिवबाबा साथ जाना है। इस समय ही शिवबाबा गाइड बनकर आते हैं। उनको ही पतित–पावन कहा जाता है। शिव के चित्र में पतित–पावन अक्षर भी आना चाहिए। सर्व पतितों को पावन बनाने वाला एक ही परमपिता शिव है। बरोबर गाँधी भी कहते थे। वो भी अपन को पतित समझते थे। इससे सिद्ध होता है कि जो भी शरीरधारी मनुष्य हैं, इस समय सभी पतित हैं। कोई भी मनुष्य किसको पावन नहीं कर सकता। यह बहुत अच्छी रीत समझाना है। पतित दुनिया और पावन दुनिया; सतयुग अलग है, कलियुग अलग है। इस समय जो भी मनुष्य आत्माएँ हैं, सिर्फ जीव आत्मा कहने से 84 लाख योनियाँ भी आ जातीं; परन्तु खास मनुष्य आत्माओं की बात है, तो सभी इस समय पतित हैं। ऐसे नहीं कि जो धर्म स्थापक आते हैं वो कोई पतित को पावन बनाते हैं। वो तो जब आते हैं, ऊपर से तो पावन है ही। इस समय तो सारी दुनिया का सवाल है। यह सृष्टि ही पतित हो चुकी है। हम जानते हैं कि जब परमपिता प० शिव की जयंती होती है, तो सभी पतित से पावन हो जाते हैं। आत्मा को ही पावन और फिर पतित होना है। ऐसे नहीं कि जो पावन आत्माएँ आती हैं, वो आकर सभी को पावन बनाती हैं। नहीं, बहुत थोड़ो को बनाती हैं– आटे में लूण जितने को। जो उनके धर्म के गुरु बनते हैं, अपने ही धर्म की पालना अर्थ उनको पावन बनाते हैं। पावन बनने बिगर तो धर्म की वृद्धि हो न सके। बाकी सारी पतित दुनिया को पावन करने वाला एक है। उनकी जयंती ही हीरे तुल्य है। बाकी सभी कौड़ी तुल्य हैं। वो ही सारी दुनिया को पावन बनाए, हीरे जैसा बनाते हैं। हीरा पवित्र को और कौड़ी अपवित्र को कहा जाता है। वहाँ तो सब हीरे जैसे हैं। हीरों में भी नम्बरवार हैं। सभी आत्माओं को अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। दैवी धर्म की आत्माओं का कितना भारी पार्ट है। तो जयंती एक ही पतित–पावन की मनानी है। वो ही सभी को आकर सद्गति देते हैं। बच्चों को समझाना भी ऐसे हैं। भल बड़े–2 हॉलों में भाषण करते हैं, तो पहले–2 परमपिता प० की महिमा करनी है। विद्वान–आचार्य भी भाषण करेंगे तो पहले कहेंगे प० नमः; परन्तु उनको मालूम नहीं कि प० कौन है। उनको नमः क्यों की जाती है; क्योंकि सभी पतित को उसने पावन किया है। इसलिए सब भिन्न–2 भाषा में नमस्ते करते हैं। नानक भी उनकी महिमा करते थे। अब हम जानते हैं, इस समय शिवबाबा आते हैं जबकि सभी मनुष्य तमोप्रधान, कब्रदाखिल हैं; तब सभी को आए शांतिधाम, सुखधाम ले जाते हैं। सभी को 5 विकारों की बांडेज से छुड़ाते हैं। उनकी ही महिमा गाते हैं कि ज्ञान अंजन गुरु दिया.....; परन्तु वो कब आते हैं? ये कोई की बुद्धि में नहीं आता कि कलियुग बाद सतयुग को आना है। वो हिस्ट्री रिपीट होनी है। जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन वैसे कलियुग बाद सतयुग को आना है। ज़रूर नई दुनिया स्थापन करने प० ही आएगा। जयंती भी मनाते हैं तो ज़रूर बाप कब आया होगा; परन्तु मनुष्यों ने ड्रामा का चक्कर लाखों वर्ष देकर उल्टा कर दिया है। इसलिए सब कुंभकर्ण की नींद में सो गए हैं। अब बाप ने आकर तुमको जगाया है। तो तुम औरों को जगाने की सर्विस करते हो। गाँधी, जिसको कौरव पति कहते, उनके शुभ महावाक्य निकलते

थे कि पतित–पावन एक। भल बिगर समझ कह देते थे। पतित–पावन सीता–राम कहें तो भी ठीक। उसने रघुपति कह त्रेता के राम का .... लगाए दिया। दिखाते हैं, सीता पतित बनी, ऋषि के घर जाए दो बच्चे पैदा किए। कितनी ग्लानि की है। दिखाते हैं, सीता को रावण से छुड़ाया। ऐसे तो नहीं कहते, सीता को पावन बनाया। साधारण रीत कुछ भी नहीं समझ सकते हैं। फिर भी यह तो अवश्य कहेंगे कि दुनिया पतित है। वास्तव में, पतित की कब महिमा होती नहीं; परन्तु जब कोई पावन ही नहीं हैं तो पतितों की ही महिमा करते हैं। पावन दुनिया में किसकी महिमा करेंगे? ल०ना० की क्या महिमा करेंगे? पास्ट के जन्म में उनकी आत्मा को परमपिता प० ने आए पावन बनाए स्वर्ग का मालिक बनाया। तो महिमा बनाने वाले की करेंगे ना! तुम देख रहे हो, वही ब्रह्मा–सरस्वती दोनों पुरुषार्थ कर रहे हैं। वे दोनों जाकर ल०ना० बनेंगे। ल०ना० के चित्र पर भी लिख सकते हैं कि इनको(की) पास्ट जन्म की आत्मा ब्रह्मा–सरस्वती के रूप में ज्ञान सागर शिव से राजयोग सीख, फिर ल०ना० बने हैं प्रजा सहित। यहाँ सभी पुरुषार्थ कर रहे हैं, जिससे सूर्यवंशी–चंद्रवंशी माला बनती है। इन चित्रों पर बहुत अच्छी समझानी लिखनी है। इस समय और जो भी चित्र हैं, वो सभी हैं बेसमझी के बने हुए। अब अपन को बाप ने समझदार बनाया है, तो चित्र भी समझ से बनाना पड़े। भेंट करनी पड़ती है– इन्होंने कैसे चित्र बनाए हैं। अपना ये कृष्ण का चित्र भी बिल्कुल क्लीयर है। इनका अन्तिम जन्म नर्क में है। अब नर्क को लात मार रहे हैं। नर्क से फिर स्वर्ग में आना होता है। इसलिए अब यह राजयोग सीख रहे हैं। ऐसा क्लीयर लिखना है जो मनुष्य समझ सके। मनुष्य तो सभी बेसमझ हैं, बिल्कुल तुच्छ बुद्धि हैं अथवा पत्थरबुद्धि हैं, विद्वान–पंडितों सहित; तब कहा है उन सभी को छोड़ो, इन्होंने तुमको तुच्छ बुद्धि बनाया है। अब मैं तुमको स्वच्छ बुद्धि बनाता हूँ। मेरी श्रीमत तो गाई हुई है। मेरी श्रेष्ठ मत से तुम पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनते हो। दिलवाड़ा मंदिर में भी देखो राजयोग सीख रहे हैं। आदिदेव, आदिदेवी, अधर कन्या, कुँवारी कन्या सभी राज ऋषि हैं। राजयोग कमाए रहे हैं। ये ही फिर स्वर्ग के मालिक बनते हैं। उनका ऊपर मंदिर है। कितना एक्युरेट मंदिर है। और भी शायद ऐसा मंदिर है, वो भी जाकर देखना चाहिए। अपने यादगार क्यों नहीं देखेंगे! आगे तो अंधश्रद्धा से जाए देखते थे। अब तो समझते हैं, हमारा यादगार है। राजयोग ऋषि और हठयोग ऋषि, रात–दिन का फर्क है। राजयोग ऋषि बनाने वाला है शिव और हठयोग ऋषि बनाने वाला है शंकराचार्य। जैसे शिव नाम है, उसको भी आचार्य कहेंगे; क्योंकि ज्ञान समझाते हैं, वैसे इनका नाम शंकर है, फिर तत्व का ज्ञान सुनाते हैं, तो शंकर आचार्य नाम पड़ा है। बाकी उनका वास्तव में कोई शास्त्र है नहीं। वो तो निवृत्ति मार्ग वाले है ना! सन्यासियों को वेद–शास्त्र पढ़ने की दरकार नहीं। जैसे अभी हमको बाप समझाते हैं, तो हम समझते हैं, वैसे शंकराचार्य ने भी जो समझाया होगा, वो सुना होगा। उन्हों का कोई शास्त्र है नहीं। जैसे अब हमको बाप मंत्र देते हैं कि बाप और वर्से को याद करो, उसने फिर कहा होगा तत्व को अथवा ब्रह्म को याद करो तो उसमें लीन हो जाएँगे। बस, उनका है हठयोग, जंगल में चले जाते, यहाँ तो कुटुम्ब के कुटुम्ब को पवित्र बनाना है। सतयुग में पवित्र गृहस्थ आश्रम था, अब अपवित्र है। अब बाप कहते हैं, सारे कुटुम्ब सहित पवित्र बनो, बिगर पवित्र बनने मेरे पास आए न सकेंगे। सिर्फ शिवबाबा को याद करना है, इससे तेरी स्त्री–बच्चे सभी पवित्र दुनिया में आ जावेंगे। सारा मदार पवित्रता पर है। मॉरटल और इमॉरटल। भारत मॉरटल

था, अब इमॉरटल है। अर्थात् अपवित्र है। भारत के लिए ही कहेंगे। अब जो पवित्र बनेंगे वो ज़रूर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। जो नहीं बनते तो झगड़ा करेंगे। विघ्न तो पड़ते ही है। ड्रामा अनुसार कल्प पहले भी पड़े थे। ड्रामा पर जो खड़े हैं वो कभी मूँझेंगे नहीं। है तो बड़ी सहज बात, प्राप्ति बहुत भारी है। कन्याओं–माताओं सबको पवित्र बनना है, नहीं तो शादी–बरबादी हो जाएगी। तो इसलिए पतित–पावन अक्षर शिवबाबा के ऊपर ज़रूर लिखना है। इनकी जयंती ही हीरे तुल्य है। बाकी सभी गुरु–गोसाईं तो कौड़ी तुल्य हैं। अब दुनिया ही कौड़ी तुल्य है, तो इसमें इनका भी मान है। सभी तेरे पास आवेंगे, पवित्र ज़रूर बनेंगे। पवित्रता को ही हीरे समान कहते हैं। गीत भी बच्चों के लिए बहुत अच्छा है। हीरे जैसे बनाने वाले बाप को कब न छोड़ेंगे। अपवित्र कुटुंब से मोह हट जाना है। हीरे जैसा मिल गया फिर किसकी परवाह। परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले प० की, वह मिल गया फिर किसकी परवाह! हर बात में नष्टोमोहा चाहिए। बुद्धि क्लीयर है तो धारणा भी होती है और पद भी ऊँचा पाते हैं। देखते हो, मम्मा–बाबा सर्विस करते हैं तो उनका पद ऊँचा है। बच्चों का तो और ही अच्छा पद है। माँ–बाप के तख्त पर तुम बच्चे जीत पहनते हो नम्बरवार। बच्चों का तो हक है जीत पाना, बाप से राजभाग का वर्सा लेना। हाँ, इतना अवश्य है, जो तीखे हैं वो पहले वर्सा लेंगे। बच्चे बने हो तो वारिस तो बनेंगे; परन्तु पास विथ ऑनर्स होना चाहिए। बाकी थप्पड़ खाई फिर टोली मिले, ये तो बेइज्जती हुई ना! वैसे तो दास–दासियों का भी मर्तबा कितना है। राजकुमार जाए क्वीन का पेशगीर उठाते हैं, जब कारोनेशन आदि होता है। वो हुए रॉयल दास–दासियाँ। तुमको तो बाबा स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। कहते हैं, मेरे को याद करो तो पापों से मुक्त होंगे। तो और कोई की महिमा नहीं है। मनुष्य की महिमा है वर्थ कौड़ी और शिव की महिमा है बर्थ पाउंड, बल्कि डायमण्ड। अब बाबा शिव का चित्र फिर नया लिखत सहित बनावेंगे। जब तक बने तब तक उनपर चिटकियाँ लगाए सकते हैं, जिसमें लिखा है– त्रिमूर्ति शिव जयंती इज़ गीता जयंती। शिव जयंती इज़ बर्थ डाइमन। बाबा ने 30×40 वाले झाड़–त्रिमूर्ति लिए बनवाई थी, वो लगाए देनी है। बाबा को चित्रों का बहुत शौक है; क्योंकि हम बनाते हैं अर्थ सहित। बाकी सभी चित्र हैं अर्थ रहित। जैसे सच्ची गीता बनाई है वैसे सच्चे चित्र भी बनाने हैं। अच्छा, आज है सत्गुरुवार। यह भी हमारे लिए है, बाकी मनुष्यों लिए है झूठी गुरुवार। सभी गुरु लोग झूठ बोलने वाले हैं। पहला नम्बर झूठ है– ईश्वर सर्वव्यापी है। फिर सेकण्ड नंबर है– गीता का भगवान कृष्ण है। ये दोनों हैं झूठ के बड़े बॉम्ब्स। इसलिए कौड़ी तुल्य नर्कवासी बन पड़े हैं। तो बहुत नुकसान कारक हुए ना! हर एक बात सिद्ध कर लिखनी है। हम बहुत अच्छी कमाई कर रहे हैं। बच्चे, माँ–बाप के तख्त पर हक जमाते हैं। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। शिव का चित्र सामने रख भोग लगाना अच्छा है। गुरुद्वारे में ग्रंथ के नीचे भोग रखते हैं। वास्तव में रखना चाहिए गुरुनानक के चित्र के आगे। ग्रंथ थोड़े ही भोग खाएँगे। जैसे गीता को भोग थोड़े ही लगाया जाता है। अब तो अपन शिवबाबा को ही भोग लगाएँगे, तो शिवबाबा याद पड़ेगा, विकर्म विनाश होंगे। ये भी अच्छी युक्तियाँ हैं। बाप के पास जाना है; इसलिए याद करते हैं। याद न करते हैं तो गोया नहीं जाए रहे हैं। हमारी परवरिश शिवबाबा ही कराते हैं। जो खिलाते हैं उसको ज़रूर याद करना पड़े। यह भी प्रैक्टिस बहुत चाहिए। अमृतवेले याद करना सबसे अच्छा है। शिवबाबा आप हमको कितना सुख देते हो, कितना ऊँच पद देते हो। जो याद करते होंगे वो अनुभव बताएँगे। ऐसे हम बिलवेड बाप को याद कर, उसकी महिमा करते हैं– बाबा, आप तो कमाल करते हो, पतित को पावन, स्वर्ग का मालिक बनाते हो। ऐसे अनुभव सुनाना चाहिए। शुक्रिया मानना चाहिए। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ सर्व गॉडली स्टूडेंट, ब्रदर्स और सिस्टर्स को निर्वैर की यादप्यार स्वीकार हो।